नैषधीयचरित - हर्ष, माघ और भारवि ये तीन महान कवि के रूप में जाने जाते हैं। इन तीनों के महाकाव्य 'बृहत्-त्रयी' के रूप में विशिष्ट रूप से जाने जाते हैं। यह अलंकृत और रसमयी दोनों पद्धतियों का समन्वय करता है। इसमें कल्पना-जन्य वर्णनों (वर्णनों) की प्रचुरता के कारण यह भारवि और माघ के काव्यों से बड़ा हो जाता है - 'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।

नैषधीय चरित महाकवि हर्षरचित एकमात्र काव्य है बाईस सर्गों (22) में निबद्ध इस महाकाव्य में राजा नल और दमयन्ती के प्रणय और परिणय की कथा है। इसकी कथा महाभारत के वनपर्व से उद्धृत है। अल्प कथानक को लंबे-लंबे 22 (22) सर्गों में फैलाया गया है। जैसे - प्रथम सर्ग में नल और दमयन्ती का एक-दूसरे के बारे में जानना; नल का वन-विहार, एक हंस को पकड़ना, दयावश उसे छोड़ देना। (2) हंस की कृतज्ञता तथा दमयन्ती का गुणवर्णन, नल के अनुरोध पर हंस का दमयन्ती के पास 'कुण्डिन पुरी' जाना (3) हंस का दमयन्ती के समक्ष नल के गुणों की चर्चा। दमयन्ती के नल के प्रति आकर्षण, हंस का वापस लौट जाना। (4) दमयन्ती की विकलता, चन्द्रमा को उलाहना, पिता भीमसेन द्वारा स्वयंवर का निर्णय लेना। (5) इन्द्र, अग्नि, यम और वरुण द्वारा नल को दूत रूप में दमयन्ती के पास भेजना (6) अदृश्य रूप में नल का दमयन्ती के पास पहुँचना, उसको निरीक्षण। (7) दमयन्ती का नख-शिख वर्णन (8) नल द्वारा देवताओं का संदेश दमयन्ती को सुनाकर उनमें से किसी को वरण करने की प्रार्थना। (9) नल-दमयन्ती का संवाद, देवताओं को छोड़कर, नल को स्वयंवर के लिए राजी करना (10) दमयन्ती के स्वयंवर का वर्णन। (11) इन्द्रादि देवताओं तथा नल का श्लेष - पञ्चार्थ-प्रतिपादक श्लोकों सरस्वती द्वारा वर्णना (14) दमयन्ती द्वारा देवताओं की स्तुति, उनसे श्लेष समझने की शक्ति प्राप्त होना। देवताओं का आशीर्वाद। (15) विवाह की तैयारी (16) विवाह, भोजन और नल का अपनी राजधानी में लौटना। (17) देवताओं का लौटना,

Scanned with CamScanner

मार्ग में कलि से भेंट और उनके द्वारा चार्वाक सिद्धान्तों का वर्णन, देवताओं का खंडन, नल का विवाह जानकर उन्हें राजच्युत करना और दमयन्ती-वियोग का शाप देना। (18) नल और दमयन्ती-विहार (19) प्रभात-काल में वैतालिक द्वारा नल को जगाना, सूर्योदय तथा चन्द्रास्त का वर्णन (20) नल और दमयन्ती का प्रेमालाप (21) नल द्वारा विष्णु, शिव, वामन आदि देवताओं की प्रार्थना (22) संध्या और रात्रि का वर्णन, चंद्रोदय एवं दमयन्ती के सौंदर्य का वर्णन।

बहुत से विद्वानों ने इस महाकाव्य को अधूरा कहा है, किन्तु यह बात असंगत है। श्रीहर्ष ने नायक के संकटों को न दिखाकर इसे शृंगार-प्रधान महाकाव्य बनाना चाहा था। इसके टीकाकार नारायण ने भी स्पष्ट किया है कि 22 सर्गों का नैषधीयचरित पूर्ण महाकाव्य है-(इदानीं काव्यसमाप्तिं चिकीर्षुः श्रीहर्षो नायकमुखेनाशिषमाशास्ते 22/148 का अवतरण)। इसपर अनेक प्रसिद्ध टीकाएँ लिखी गयी हैं, उस दृष्टि से यह महाकाव्य बहुत लोक-प्रिय रहा है। कल्पना, गंभीरचिंतन, अलंकारों के साथ ध्वनि एवं लोकानुभव का समन्वय करने में श्रीहर्ष को महारत हासिल है।

महाकाव्य के आरंभ राजा नल का वर्णन बिल्कुल नये ढंग से किया गया है - 'अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीताङ्गगुणेन विस्तरम्। अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयद्वीपपृथग्जयश्रियम्॥' अर्थात् उस नल के जिह्वाग्र पर सदा नृत्य करनेवाली विद्या (सरस्वती) ने षडङ्गों से गुणित होकर (शिक्षा, व्याकरण, छन्द, ज्योतिषादि) (कल्प, निरुक्त) (त्रयी) वेदविद्या के समान विस्तार को प्राप्त होनेवाली अठारह द्वीपों की विजयलक्ष्मी को पृथक्-पृथक् जीतने की इच्छा से अष्टादश संख्या को प्राप्त कर लिया था। अपनी विद्वता का पूर्ण प्रदर्शन इनकी काव्य में की गई व्युत्पत्ति के प्रदर्शन में मिलता है, विद्वानों के लिए इसकी कठिनाईयाँ साध्य थीं। किन्तु 'नैषधं विद्वदौषधम्' द्वारा काव्य दुरुहता और महानता का परिचय भी प्राप्त होता है।

UMA PATHAK
D.EL.ED SKM